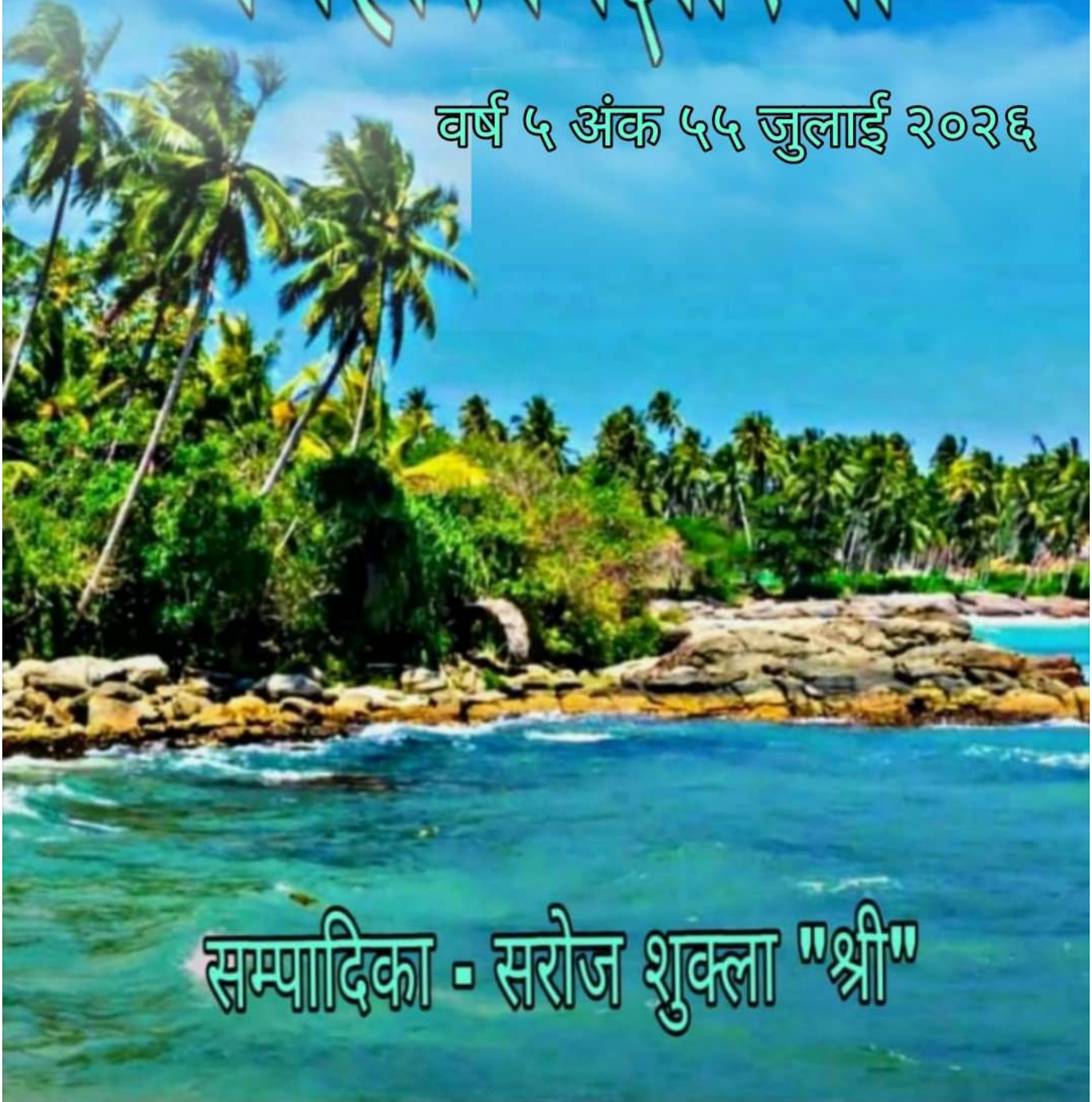
साहित्य संगम संस्थान
रा.पंजी.सं.एस-१८०१/२०१७(नई दिल्ली) बिहार इकाई

# बिहार निर्झरिणी

वर्ष ५ अंक ५५ जुलाई २०२६



सम्पादिका - सरोज शुक्ला "श्री"

साहित्य संगम संस्थान,रा.पं. सं.एस-१८०१/२०१७,नई दिल्ली

# बिहार निर्झरिणी

## अनुक्रमणिका

साहित्य संगम संस्थान,रा.पं. सं.एस-१८०१/२०१७,नई दिल्ली

# बिहार निर्झरिणी

## सम्पादक मण्डल



राजवीर सिंह मंत्र
राष्ट्रीय अध्यक्ष
साहित्य संगम संस्थान



राजेश कुमार शर्मा पुरोहित
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
साहित्य संगम संस्थान



सरोज शुक्ला श्री
राष्ट्रीय सह अध्यक्षा
साहित्य संगम संस्थान



दिनेश मिश्र मुखर
अध्यक्ष
साहित्य संगम संस्थान बिहार इकाई



पूनम वर्मा अनूप
अलंकरणकर्ता

साहित्य संगम संस्थान,रा.पं. सं.एस-१८०१/२०१७,नई दिल्ली

# बिहार निर्झरिणी

## केन्द्रीय कार्यकारिणी



4

वर्ष ५ अंक ५५ जुलाई २०२६

साहित्य संगम संस्थान,रा.पं. सं.एस-१८०१/२०१७,नई दिल्ली

# बिहार निर्झरिणी

## प्रांतीय पदाधिकारी



अध्यक्ष
दिनेश मिश्र मुखर



कार्यकारी अध्यक्ष
संजय कुमार सिंह सरल



पंचपरमेश्वरी
कुमकुम कुमारी काव्यकृति



सचिव
प्रवीणा कुमारी



अलंकरण प्रभारी
पूनम वर्मा अनूप

साहित्य संगम संस्थान,रा.पं. सं.एस-१८०१/२०१७,नई दिल्ली

# बिहार निर्झरिणी

## संपादकीय



साहित्य समाज का दर्पण है। समाज में जो कुछ घटित होता है साहित्य उसका वर्णन करता है और समाज के लिए दिशा निर्देश देता है। एक अच्छा साहित्यकार तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों पर अपनी लेखनी के माध्यम से मार्गदर्शक, प्रेरणाप्रद और क्रांतिकारी विचारों को समाज को समर्पित करता है। बिहार निर्झरिणी पत्रिका साहित्य संगम संस्थान बिहार इकाई के पटल पर आई हुई रचनाओं को संकलित करके अपने ५५ वें पड़ाव के साथ आपके सम्मुख प्रस्तुत है। यह पत्रिका समाज के सभी वर्गों के लिए एवं नवोदित साहित्यकारों के लिए मील का पत्थर सिद्ध होगी ।

सरोज शुक्ला 'श्री'
सह अध्यक्षा
साहित्य संगम संस्थान

साहित्य संगम संस्थान,रा.पं. सं.एस-१८०१/२०१७,नई दिल्ली

बिहार निर्झरिणी

# राज की बात



साहित्य संगम संस्थान, बिहार इकाई द्वारा, बिहार निर्झरिणी नामक पत्रिका आदरणीया सरोज शुक्ला "श्री"जी के मार्गदर्शन में, लगातार प्रकाशित हो रही है।

इसी तारतम्य में माह अंक ५५ जुलाई २०२६ आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। आशा है यह साहित्यिक पत्रिका हिन्दी साहित्य को बढ़ावा देने का कार्य अनवरत, सफलतापूर्वक करती रहेगी।

अंत में पत्रिका से जुड़े समस्त साहित्यकारों, अलंकरण कर्ताओं एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ ज्ञापित करता हूँ।

जयहिंद,जय भारत,जय भारती।

**राजवीर सिंह 'मंत्र'**
राष्ट्रीय अध्यक्ष
साहित्य संगम संस्थान



# अध्यक्षीय

बिहार निर्झरिणी का यह अंक पुनः नवीन कलेवर के साथ नित्य नूतन भावधारा के प्रवाह में किंचित सापेक्ष सत्य के दर्पण से परिलक्षित, युगबोध से आकलित सहृदय पाठकों को समर्पित है। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि यह अंक भी सबको आह्लादित करती रहेगी।

**दिनेश मिश्र मुखर**

साहित्य संगम संस्थान,रा.पं. सं.एस-१८०१/२०१७,नई दिल्ली



# शुभकामना संदेश



साहित्य संगम संस्थान की बिहार इकाई द्वारा मासिक ई पत्रिका बिहार निर्झरिणी के प्रकाशन की शुभ सूचना आदरणीय दिनेश जी मिश्रा साहब से प्राप्त हुई। इस जुलाई माह के अंक में पर्यावरण संरक्षण से सम्बंधित पढ़ने को मिलेगी। गर्मी के कारण बेहाल हो रहे लोग। लू की लपटें शुरू हो गई है। जंगल बचाओ,जमीन बचाओ,जल बचाओ ,वन्य जीवों पक्षियों को बचाओ जैसी मुहिम की आज जरूरत है। इस विशेषांक में ऐसी रचनाएं शामिल होगी ऐसा विश्वास करता हूँ।

मई के विशेष अंक में देश के श्रेष्ठ रचनाकारों की रचनाएं शामिल की जाती है। इस अंक में भी आप उत्कृष्ट रचनाओं को पढ़ेंगे।

मैं इस अंक के प्रकाशन हेतु आदरणीय मिश्रा जी को हार्दिक बधाई देता हूँ।

डॉ. राजेश कुमार शर्मा पुरोहित, उपाध्यक्ष
साहित्य संगम संस्थान, नई दिल्ली

# शुभकामना संदेश



साहित्य संगम संस्थान की  सह अध्यक्षा आदरणीया सरोज शुक्ला "श्री"जी के मार्गदर्शन में, 'बिहार निर्झरिणी' साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन सतत हो रहा है। इसी तारतम्य में इस पत्रिका १०१६ का जुलाई माह का ५५वाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है ।

साहित्य मानव मन एवं स्वभाव की उपज है। डॉ. श्यामसुंदर दास के अनुसार, "सामाजिक मस्तिष्क अपने पोषण के लिए जो भाव सामग्री निकाल कर समाज को सौंपता है, उसके संचित भंडार का नाम साहित्य है।"

इसी प्रकार आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने कहा है--

"ज्ञान राशि के संचित कोष का नाम साहित्य है।"

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि साहित्य मानव समाज की भावात्मक स्थिति और गतिशील चेतना की अभिव्यक्ति है।

हमारा देश अथवा समाज मात्र भौतिक उन्नति से महान नहीं बन सकता है, अपितु उसकी महानता उसके साहित्य की समृद्धता पर निर्भर करती है।

साहित्य जहाँ समाज से प्रभावित होता है, वहीं वह श्रेष्ठ समाज निर्माण में मार्गदर्शक की भूमिका भी अदा करता है। साहित्य का काम समाज में प्रचलित परंपराओं का मात्र गुणगान करना नहीं है, अपितु उसे श्रेष्ठता की ओर ले जाने के लिए विद्रोह का भाव भी होना चाहिए, तभी साहित्य का स्तर ऊँचा होगा एवं साहित्य का स्तर ऊँचा होने से के साथ ही हमारे समाज और राष्ट्र का स्तर भी ऊँचा होगा।

अतः समाज राष्ट्र और वैयक्तिक विकास के लिए श्रेष्ठ साहित्य का होना आवश्यक है। जो काव्य/साहित्य समाज और राष्ट्र के विकारों को भस्मीभूत करने में सक्षम नहीं है, उसे श्रेष्ठ साहित्य नहीं कहा जा सकता है।

अंत में पत्रिका से जुड़े  प्राप्त रचनाकारों एवं योगदान कर्ताओं को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

चंद्र पाल सिंह 'चंद्र'

राय बरेली, उ० प्र०

साहित्य संगम संस्थान,रा.पं. सं.एस-१८०१/२०१७,नई दिल्ली



# शुभकामना संदेश



साहित्य संगम संस्थान, बिहार इकाई द्वारा प्रकाशित बिहार निर्झरिणी मासिक ई-पत्रिका के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएँ ।उत्कृष्ट सृजन को संजोकर उसे सुसंस्कृत एवं सुंदर रूप में पाठकों तक पहुँचाने का यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है। प्रत्येक अंक की भाँति यह अंक भी ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी एवं संदेशप्रद है । पत्रिका की मुख्य संपादक सरोज शुक्ला जी, दिनेश मिश्र जी तथा संपूर्ण संपादक मंडल हार्दिक बधाई के पात्र हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि आप सभी इसी प्रकार समर्पण और उत्कृष्टता के साथ आगामी अंकों को भी सुसज्जित करते रहें ।

जय हिंद, जय हिंदी

**छाया सक्सेना प्रभु**
**संगम सवास नारी मंच**

साहित्य संगम संस्थान,रा.पं. सं.एस-१८०१/२०१७,नई दिल्ली
बिहार निर्झरिणी



# गणेश वन्दना

शैलसुता प्रिय लाल गजानन पूजित हैं प्रथमेश हमारे।
सिंदुर शोभित भाल विशाल सदाशिव के प्रिय पुत्र दुलारे।
मूषक वाहन है जिनका अरु मोदक भोग चढ़े उनका रे।
संत करें नित वंदन पूजन छंद प्रबंध सजे नित प्यारे।१.
हैं वरदायक मंगल मूरत मंगल के धुन तान सुना रे।
आज लला पगधार रहे शुभ संगम का यह भाग बना रे।
पावन मंच हुआ लगता मिल शारद नारद बात बिचारे।
ब्यास समास सुवास विलास करें नित संगम के मझधारे।२.

दिनेश मिश्र 'मुखर'

साहित्य संगम संस्थान,रा.पं.  सं.एस-१८०१/२०१७,नई दिल्ली

# बिहार निर्झरिणी

## सरस्वती वन्दना



हंस वाहिनी ज्ञान दायिनी,
अब मातु कृपा कर दो ।
माँ शून्य पड़े इस मानस में,
रस ज्ञान सुधा भर दो ॥
करूं वन्दना  मातु शारदे,
झंकृत वीणा कर दो ।
मैया नित नव छंद  रचूँ मैं,
मुझको ऐसा वर दो ॥
है घनघोर अंधेरा छाया,
प्रकाश उर में भर दो ॥
मां अपनी प्यारी आभा से,
जग को जगमग कर दो ॥
शब्दों की माला अर्पित है,
लेखन सक्षम कर दो ।
मातु भारती काव्य जगत में,
आज अमरता वर दो ॥

सरोज शुक्ला 'श्री'
कुचामन सिटी, राजस्थान

साहित्य संगम संस्थान,रा.पं. सं.एस-१८०१/२०१७,नई दिल्ली



# दोहे

**1.** जब मन डूबे मोह में, तब प्रभु आएँ याद।
सुख में सुध आए नहीं, दु:ख में करें फ़रियाद।।
**2.** कण-कण में बसते सदा, फिर क्यों ढूँढे धाम।
हृदय शुद्ध कर देख ले, वहीं मिलेंगे राम।।
**3.** भक्ति करे जो हृदय से, रखे न जन से द्वेष।
प्रेम भाव से जो जपे, प्रभु हरते सब क्लेश।।
**4.** जीवन ये मझधार है, राम नाम पतवार।
निर्मल मन से जो जपे, उतरे भव के पार।।
**5.** गुरु बिन ज्ञान न होत है, भक्ति बिना भगवान।
दोनों का संगम जहाँ, वहीं मिले वरदान।।
**6.** दया धर्म जिस हृदय में, वहीं बसे भगवान।
पूजा-पाठ बिना उसे, मिले सहज वरदान॥

पूनम वर्मा

साहित्य संगम संस्थान,रा.पं. सं.एस-१८०१/२०१७,नई दिल्ली
बिहार निर्झरिणी

# गजल

है कौन सी मुहब्बत, की जिसमे गम नहीं है।
अपने दिलों में देखो, खुद्दार की कमी है।।

नजरे मिली नजर से, दे प्यार की गवाही।
दिल हो गया दिवाना रूझान प्यार की है।।

जज्बात कह रहा है,आवाज है दिलों का।
सारे बदल गये है हालात जिंदगी है।।

पी जाम वह लिया है, आवाज लड़खड़ाते।
संगीत गुनगुनाये संवाद आशिकी है।।

पागल बना दिवाना, गलियों में घूमता है।
मनमीत ढूँढ़ता है, छुपकर खड़ा गली है।।

सच बात यार लगता देखो जरा नजर से।
चेहरे का रंग निखरा, पहचान प्यार की है।।

कुछ लोग सिरफिरे से,घुसपैठिये बने है।
है सावधान रहना,लगता कथन सही है।।

चन्द्र भूषण निर्भय

साहित्य संगम संस्थान,रा.पं. सं.एस-१८०१/२०१७,नई दिल्ली
बिहार निर्झरिणी

# जीवन के सुनहरे पल

जीवन के सुनहरे पल,मुट्ठी में रेत समान है,
धीरे-धीरे सरकते,कब बीते न पहचान है।
जो हर क्षण को जी लेता,बनकर भावों निर्मल,
उसके आँगन खिल उठते ,सुख-संतोषी चाव है।

माँ की ममता,पिता स्नेह,बालपन मुस्कान है,
संग-साथ अपनों का,सबसे बड़ा वरदान है।
धन-दौलतें सब क्षणिक यहाँ,मिट जाते अभिमान,
प्रेम भरे रिश्तों से,सदा जीवन महान है।

संघर्षों की धूप जो, रखता धैर्य विशाल है,
उसके जीवन-पंथ पर,खिलते सफल गुलाल है।
अश्रु,परिश्रम,त्याग,धीरज से,गढ़ते अपना मान,
सुनहरे वे पल बनें,जो दें जगत पहचान है।

कल की चिंता छोड़कर, जी लो आज उदार है,
सेवा, सद्भाव, सत से, भरता जीवन सार है।
जब पीछे मुड़कर देख,अंतस में हो उल्लास,
सुनहरे पल वही कहें—जीवन था मधुमास है।

डॉ. राम कुमार झा "निकुंज"

साहित्य संगम संस्थान,रा.पं. सं.एस-१८०१/२०१७,नई दिल्ली



# समय बड़ा बलवान

कल तक मूरख जिनको माना,आज वही गुणवान।
पल पल जीवन बदल रहा है,समय बड़ा बलवान।।
जिस धरती की पूछ नहीं थी,समझी थी बेकार।
पानी बिजली के कारण अब, अच्छी पैदावार।
जहां तहां थी गन्दी बस्ती,शहर बने हैं आज।
औद्योगिक विकास है भारी,युग विज्ञानी राज।।
बदल गया है रहन सहन भी, बदल गया इंसान।
आंख दांत मानव के नकली,समय बड़ा बलवान।।
धर्म तंत्र भी बना लुटेरा,लूट रही सरकार।
भीड़ तंत्र सत्ता पर काबिज, होता भ्रष्टाचार।
देश भक्त का पहने चोला,नामी जो गद्दार।
पढे लिखे सड़कों पर फिरते, मिलता न रोजगार।
नौकर चाहे राजा बनना,राजा अब भगवान।
बदल रहा आज जमाना, समय बड़ा बलवान।।

राजेश कौरव सुमित्र

साहित्य संगम संस्थान,रा.पं. सं.एस-१८०१/२०१७,नई दिल्ली
बिहार निर्झरिणी

# मैं अंतरमन का गुलशन हूँ

मैं आग नहीं जो जलता रहूँ,
मैं पाषाण नहीं जो निष्ठुर रहूँ।
मैं शीतलता का फव्वारा हूँ,
मैं ज्वालामुखी हीरे वाला हूँ।
मैं सागर हूँ, मैं शील हूँ,
मैं भावनाओं का पीर हूँ।
मैं चमन हूँ रेगिस्तान में,
व्यस्ततम जहाँ में मैं धीर हूँ।
मैं शीतलता का मुहूर्त हूँ।
मैं अंतरमन का गुलशन हूँ।। -२
जब हाल पस्त लगने लगे,
जब हौसला निरस्त लगने लगे,
तब बंद अपने नेत्रों को कर,
मन की गहराइयों में ढूँढने पर
टिमटिमाता बल्ब-सा धीरे-धीरे
प्रकाशित होती मंज़िल की।
वही सँकरी राहों का
मैं ही तो गर्जन हूँ।

मैं अंतरमन का उपवन हूँ,
मैं अंतरमन का गुलशन हूँ।
चमक-दमक कर समेट लेता
व्यथित मन की हर एक पीड़ा।
फिर बिखर कर वेदना पर
प्रफुल्लित करने वाला गर्जन हूँ,
मैं अंतरमन का गुलशन हूँ।।
मैं विचलन में धीर हूँ,
मैं चंचलता में गंभीर हूँ।
मैं मासूम-सा बचपन हूँ,
मैं जिजीविषा का दर्पण हूँ।
मैं अंतरमन का गुलशन हूँ।।
मैं आस के दिए की बाती हूँ,
मैं स्वस्थ मन का साथी हूँ।
मैं हूँ तो जग खुशबूदार है,
मैं उन सुगंधों का प्रबंधन हूँ।
मैं ही जग में गुलशन हूँ,
मैं अंतरमन का गुलशन हूँ।

शिल्पी कुमारी 'ईशानी'

साहित्य संगम संस्थान,रा.पं. सं.एस-१८०१/२०१७,नई दिल्ली
बिहार निर्झरिणी

# गुम सुम अयोध्या

कोई इतना भी गिर सकता ,कभी क्या सोचा है।
न्याय की आस में गुम सुम यहां , खड़ा अयोध्या है।
कोई श्रद्धा से मंदिर में , चढ़ता सोना और चांदी ,
कौन लुटा है मंदिर को , किसने दीवाल है फांदी।
पाप का गढ्ढा अंदर से , आखिर किसी ने खोदा है,
फूल थे आस्था के पैर से , आखिर किसने रौंदा है।
रोज चोरी हुवा पर चोर को , कोई क्यूं न देखा है,
कैसे निकाला किस तरह , जाकर कहां पर फेंका है।
आस्था हिल गई है , आज राम भक्तों की,
मिटी हरियाली अयोध्या के, पुराने दरख्तों की।
आस्था रो रही है आज अश्क कोई क्या पोछा है,
कितने पापी मिलें हुवे है, कभी क्या सोचा है।
क्रोध से काँपता योगी , क्या इन्हें कभी छोड़ेगा,
सभी का मोटा गर्दन देखना , तोड़ेगा मरोड़ेगा।
सिसकते अयोध्या का आंसूं ,योगी ने ही पोछा है,
किसी का बचना मुश्किल है अब , भक्त ने सोचा है।

बृज भूषण प्रसाद

# न्याय की आस

अंधियारी रातों के साए में,एक दीया उम्मीद का जलता है,
टूटी हुई हरएक चौखट पर विश्वास ठहर कर पलता है।
आँखों में आँसू की धार सही, हैं सीने में ज़ख्म हज़ार ,
पर थमा नहीं है पैर कहीं,मंज़िल की चाह  है बरक़रार ।
तराज़ू के दो पलड़ों में,क्या सचमुच भार बराबर है?
या महलों की ही बात सुनी,और कुटिया का हक़ बेअसर है?
पर वक़्त बदलेगा, बात सुनो,इस सन्नाटे की चीख चुनो,
जो सोए हैं इस ग़फ़लत में,उनके जागे की आस बुनो।
ये न्याय नहीं बस काग़ज़ है,इसको हक़ीक़त बनना होगा,
हर मजलूम की आड़ बन ,सच्चाई का परचम तनना होगा।
जब तक न मिले अधिकार यहाँ,
तब तक यह जंग जारी है,
न्याय की आस ही जीवन है,अब इसकी ही बारी है।

प्रवीणा सिंह राणा 'प्रदन्या'

साहित्य संगम संस्थान,रा.पं. सं.एस-१८०१/२०१७,नई दिल्ली
बिहार निर्झरिणी

# न्याय की आस

बेचारा किस्मत का मारा था बेकसूर, गांव से आया थे खाने कमाने,बहाता था पसीना।
मालिक ने चोरी का इल्ज़ाम लगाया गरीब पर,भेज दिया जेलखाना।
मालिक के पुत्र की सजा भुगतना पड़ा,था बेटा बड़ा कमीना।
करता गल्ले से रूपये चोरी
खाता चिकन- बिरयानी,रोज का दारू पीना।
हार गया जुआ में मौटी रकम, गल्ले का कर दिया हाथ सफाई।
पोंछा लगाया था नौकर बेचारा,मालिक ने सिर पीड़ा कहां गयी पसीने की गाढ़ी कमाई।
चोरी किया है तू कहकर
किया उसको लात-घूंसों से सरेआम पिटाई।
थाना ले जाकर रिपोर्ट दर्ज करवाई,भेज दिया जेलखाना।
बेचारा रोते चीखते रहा,खाता कसम, और सुना किसी ने उसका रोना- चीखना।
न्याय की आस में भेजा प्रभु ने किसी दूत को उसके पास।
समाजसेवी ने सुनी सारी बात,पकड़ लाया वकील जमानत से छूड़ा लाया प्रकाश।
गरीब का मसीहा था वो, अपने कर्म पे रखता था विश्वास।
दीन-दुखियों की मदद करता रख मन मे आस।
न्यायमूर्ति ने निर्दोष साबित कर दिया गरीब को,कर दिया मालिक में मान हानि का दावा।
फंसा जाल में निकम्मा सेठ का बेटा,खेल रहा था जुआ- सट्टा।
न्याय की आस में कचहरी के चक्कर लगाता,सेठ था हट्टा-कट्टा।
वकील भी मूंदकर गये सब कोई तैयार नहीं हुए केस लड़ने और जमानत करने को।
हुई जमानत की अर्जी खारिज , न्यायामूर्ति भी अड़ गये
धन्ना सेठ को सबक सिखाने को।
ईश्वर भी सही- गलत का तत्काल निर्णय कर देते।
निर्दोष को बाईज्जत बरी करवाते, गुनाहगार को सजा देते।

डॉ. माधुरी त्रिपाठी रायगढ़

# मुक्तामणि छंद

नील गगन के द्वार से, वर्षा रानी आई।
बूँद-बूँद पावन गिरी, मन को अति हर्षाई।।

नाचे पात पतंग हैं, झूमें क्यारी क्यारी।
मेघ बजाते ढोल हैं, भींगी धरती सारी।।
कोयल गाती गीत है, चहके बुलबुल प्यारी।
घन सावन है आ गया, चातक है बलिहारी।।
फुनगी-फुनगी कूदकर, गौरैया मुस्काई।
नील गगन के द्वार से, वर्षा रानी आई।।

धरती ने सत्कार में, बिछा दिया है आँचल।
बादल यह सब देखके, करता है कोलाहल।।
प्रीत भरे परवेश में, संग जुड़ी पुरवाई।
बहती जैसे यूँ लगे, बजती हो शहनाई।।
बैठ घटा की पालकी, वर्षा अति शर्माई।
नील गगन के द्वार से, वर्षा रानी आई।।

भीगे मन के स्वप्न हैं, आँखों से बहते हैं।
छूते नई उमंग ये, जग से कुछ कहते हैं।।
भीग गई है रूह भी, भीगा सारा अँगना।
वर्षा तू जाना नहीं, मेरे घर में रहना।।।

निर्मल कोमल बूँद हर, है पावन सुखदाई।
नील गगन के द्वार से, वर्षा रानी आई।।

जगदीश गोकलानी 'जग'

## न आया लौट आना

सितार-ए-इश्क़ पर वो राग छेड़े, ग़ज़ल का
शौक़ है उसको पुराना।
वो ख़ुद्दार इतनी है कि सच ही बोला; नहीं
सीखा था उसने दिल दुखाना।
नया ये साल तो आया है लेकिन, बदल
पाया कहाँ मेरा ज़माना? जो बिछड़ा था
पिछले ही साल मुझसे, उसे अब तक न
आया लौट आना।
बनी है अब तो पीड़ा ही खुशी भी... है
मुश्किल इस हक़ीक़त को बताना।
किसे है चाह अब उसको ही पाने की? कि
बस चाहना ही है उसको पाना!

हिमांशु सिंह

# शहीदों की कहानी,सुनो मेरी जुबानी

शहीदों की कहानी,
सुनो मेरी जुबानी।
देश के खातिर दे दी,
जिसने अपनी जिंदगानी।
आओ बच्चों तुम्हें सुनाए,
उनकी अमर कहानी।
शहीदों की ................

संघर्षों से नहीं जिसने,
कभी किनारा किया था।
इन्कलाव का सुनो,
जिसने नारा दिया था।
वन्दे मातरम,वन्दे मातरम,
कह दे गए अपनी कुर्बानी।
आओ बच्चों तुम्हें सुनाए,
उनकी अमर कहानी।
शहीदों की...............

मातृभूमि के रज से जिसने,
माथे तिलक लगाया।
फाँसी के फंदे को जिसने,
हँस कर गले लगाया।
देश को आजाद कराने की,
जिसने मन में थी ठानी।
आओ बच्चों तुम्हें सुनाए,
उनकी अमर कहानी।
शहीदों की .............

सिर पर कफन बाँधे देखो,
निकल पड़े थे वीर बलिदानी।
आजादी की लड़ाई में,
कूद पड़े थे वीर सेनानी।
गुलामी की बेड़ियाँ तोड़ने की,
जिसने मन में थी ठानी।
आओ बच्चों तुम्हें सुनाए,
उनकी अमर कहानी।
शहीदों की ..................

देखकर अटल इरादें इनके
फिरंगियों का रोम-रोम थर्राया ।
भारत माँ के वीर सपूतों ने,
भारत का मान बढ़ाया।
किया न्यौछावर देश पर अपनी,
जिसने भरी जवानी।
आओ बच्चों तुम्हें सुनाए,
उनकी अमर कहानी।
शहीदों की............

कुमकुम कुमारी 'काव्याकृति'

# अमर बलिदानी

ये देश वीर जवान का अभिमान है बलिदान का।
मा भारती जननी भरो नित भावना गुणगान का। मुखड़ा
अंतरा
देती हमें धन धाम जो उसकी करुं नित वंदना।
पाऊं यहीं हर जन्म मां अपनी यही बस कामना।
श्री राम का शिव कृष्ण का प्रिय धीर वीर प्रमान का।
ये देश वीर......................१.
गंगा बहे जिस देश में धरती वही मन मोहती।
सीता सती पति प्रेम की कर साधना पथ सोहती।
आराधना कर ले मना अब शौर्य का शुचि मान का।
ये देश वीर......................२.
राणा शिवा अशफाक खां बलि प्राण की करते रहे।
आहूति देकर प्राण की ममता व्यथा लिखते रहे।
आओ करें कुछ ध्यान भी कुलशील ज्ञान निधान का।
ये देश वीर.................३.
कैसे गिनाकर नाम मैं सबका बखान करुं यहां।
कोई नहीं गिनती बनी जिसके समान कहूं यहां।
मां भारती शुभ आरती उस एक एक जवान का।
ये देश वीर......................४.
आजाद भारत है हुआ उनकी कृपा भर एक है।
मां भारती सुत का सदा बलिदान तो बस नेक है।
जै हिंद का जय बोलना जयगान हो प्रतिमान का।
ये देश वीर.......................५.

दिनेश मिश्र 'मुखर'___!

# गाँव की गलियाँ

बिताओ तो जहां बचपनु, बहुतु यादै सतातीं हैं ।
हमाये गाँउँ की गलियाँ हमैं अबऊँ बुलातीं हैं ।

लिपे गोबर परी गेरू, दिवारी पहिलयीं सब घर ।
भुलाएऊ नई भूलैं कभौं हम सिगरे जीवन भर ।
पुती दीवार पडुआ की ,अभौं मन को सुँधातीं हैं ।
हमाए गाँउँ की गलियाँ हमैंअबऊँ बुलातीं हैं ।

बबा जब  उठि सबेरे,दुहत्ते ,दोऊ हाँत तै गैयाँ
उठा कैं पूँछ भाजत्ते बछट्टा, जो बँधे छैंयाँ ।
भरी वे झाग की हड़ियाँ, हमैं सपने दिखातीं हैं ।
हमाए गाँउँ की गलियाँ हमैं अवऊँ बुलातीं हैं।

कड़ाके की परै सद्दी, जरा कैं आग सब तापैं ।
गरीवी ओढ़ि कैं बुढ़ियाँ, फटे कंबर परी काँपैं ।
सुनाई कहनियाँ बब्वा, हमैं सब यादि आतीं हैं ।
हमाए गाँउँ .की गलियाँ,हमैं अबऊँ बुलातीं हैं ।

भुरारे उठि चलै चकियाँ, घुरूर घुरु गीत के संगैं ।
तलैया गाँव पानी मैं, नहावैं बच्चटा नंगैं
नई दुलहिनि कलेऊ मूँड धरि , खेतन मैं जातीं हैं ।
हमाए गाँउँ की गलियाँ,हमैं अभऊँ बुलातीं हैं ।

चढै जब तेलु बिटिया को,चलें सजि कैं सबैं पूजन।
लगाबैं थपा बेसन को, लगै तब पीठिऊ सूजन।
डुकीं जो  किवान्न के पीछूँ, उनैं गारीं सुनातीं हैं ।
हमाए गाँउँ की गलियाँ हमैं अबऊँ बुलातीं हैं ॥

नई जव साल मैं नौराति दिन देवी सबै पूजैं
लदे अमवा की डारन कोयलैं डारन चढी कूजैं
भेरै गडुआ लरिकिनी गंगा जल लै रोजु जाती है
हमाए गाँव की गलियाँ हमैं अवऊँ बुलाती है ।

नरेश द्विवेदी 'शलभ'

# मित्रता की मिसाल

भाव कलश लेकर चले, भावों के रथ बैठ ।
भाव जहाँ मिलने लगे, वहीं मित्रता पैठ ।।

प्रीत हृदय में धारते, कृष्ण सुदामा मित्र ।
संदीपनि आशीष है, दोनों चित्र विचित्र ।।

सत्य समर्पण साधते , मिले द्वारिकाधीश ।
हर्षित होवे देखके, जगतनाथ जगदीश ।।

भेंट दिया तंदूल की, भोग लगाते श्याम ।
सौंप रहे सब संपदा, मन ही मन अविराम ।।

युगों -युगों से दे रहे, इसकी सभी मिसाल ।
चिर जीवे सह साधना, कृष्ण सुदामा बाल ।।

छाया सक्सेना प्रभु

साहित्य संगम संस्थान,रा.पं. सं.एस-१८०१/२०१७,नई दिल्ली
बिहार निर्झरिणी

# दोहे

अहंकार के पंक में, डूबे जो भी मूढ़।
वचन निरर्थक बोल कर, कहते उनको गूढ़।।१

निज दोषों का ठीकरा, दें औरों पर फोड़।
सबमें अवगुण दीखते, निज अवगुण को छोड़।।२

ऐसे मूरख से सदा, रहो कोस भर दूर।
नष्ट समय जो नित्य करे, सदा अहं में चूर।।३

निज अन्तस की शान्ति को, मानो धन अनमोल।
भंग कभी यह हो नहीं, सुन मूरख के बोल।।४

आभामय हो तव कवच, वर्जित पंक प्रवेश।
जग का कोलाहल कृती, पहुँच न पाए लेश।।५

अहं ग्रसित नर का सदा, मात्र एक ही काम।
निज मानस का ही गरल, बाँटे आठों याम।।6

वेदस्मृति 'कृती' ©®

# दोहे

रथ पर बैठे नाथ जी, संग भैया बलभद्र।
मौसी बाड़ी चल पड़े, लेकर बहन सुभद्र।।

खींचें रस्सी भक्तगण, गूँजे जय जयकार।
रथ यात्रा के दर्श से, तर जाए संसार।।

मौसी बाड़ी धाम को, चले जगत के ईश।
नौ दिन तक विश्राम कर, लौटेंगे जगदीश।।

रथ की रस्सी थाम लो, मिट जाए हर पाप।
जगन्नाथ की हो कृपा, कष्ट हरें प्रभु आप।।

पहिया-पहिया घूमता, संग घूमे संसार।
रथ यात्रा है मोक्ष का, सबसे सुगम्य द्वार।।

पूनम वर्मा

# अपना बिहार

कुछ दिनों पूर्व अपने बिहार की गौरवशाली राजधानी का प्रवास था . पटना मेरी ननिहाल , ससुराल तो है ही , अधिकतर संबंधी यहीं रहते हैं . वैसे आगे की नौकरी के फेरे में झारखंड आना हुआ और कालांतर में राँची में बस गया .
पटना अब बहुत बदल गया है .
अपने प्रवास में दशकों बाद रिक्शा पर बैठने की इच्छा हुई .रिक्शा वाले पटनिया मगही नहीं जानते - बोलते थे .
रिक्शे से एक प्रसिद्द चौक पँहुचा .मगही पान खाने की इच्छा हुई . पान दुकान पर भीड़ थी और लोग प्रतीक्षा में बहस कर रहे थे .
एक - का हो ! पानी - बुनी नहीं हो रहा है . खेतवा सूख गेलव .
दूसरा - कोन जात हो ? जादव कि कोयरी - कुर्मी ?
पहला - काहे ? अउर कोनो जात न हई का ?
दूसरा - माने , न जादव हो और न कुर्मी - कोयरी . है न ? तब काहे चिचिया रहे हैं ? बाकी जाति वोट बैंक है का , जो सुविधा खोजता है ? अरे सुविधा सत्ता जाति ने नेता की जाति को ही न मिलेगा . नहीं तो अल्पसंख्यक रहते , मजा मारते . चले हैं बात करने !
पहला - पढ़ल - लिखल हैं त नौकरियो तो मिलता ?
दूसरा - काहे तुमको नौकरी मिलेगा ? तुम सत्ता दल के जाति के हो क्या ? चाहे बहुत ब्रिलिएंट नबाब हो ? अपना बिहार में ज्ञान पीछे , जाति आगे रहता है . बुड़बक , समझवे नहीं करता है . अरे तुमरे जैसा तो अपना काम - धंधा भी नहीं कर सकता . काम - धंधा में दू पैसा कमाए नहीं कि लोग रंगदारी माँगने लगेगा . नहीं दिए तो लप्पड़ - थप्पड़ . कोनो बरियार मांग दिया तो गोली चलेगा . केतना पढ़ल हो ? पहला - फर्स्ट क्लास एमएससी हैं . बिना पैरवी , पैसा या सेटिंग के .
दूसरा - त हियाँ काहे मंडरा रहे हो भाई . निकल ले दिल्ली .

क्रमशः.....

साहित्य संगम संस्थान,रा.पं. सं.एस-१८०१/२०१७,नई दिल्ली
बिहार निर्झरिणी

# अपना बिहार

निकल ले दिल्ली ।यूपीएससी निकाल ले . बिहार के मेधावी लोग ढेर संख्या में यूपीएससी में जाता रहा है . अउर असंख्य इंजीनियरिंग - डाक्टरी प्रवेश परीक्षा अपने मेरिट से पास कर पढ़ने दूसरे राज्य में जाता है . जो यहीँ रह गया , ऊ बेचारा भटकता है . सत्ता जाति का है तो नेतागिरी करो मलाई चाभो . टेलेंट का कमी बिहार में कोई थोड़े न है . हियाँ रहिएगा त कोनो कदर नहीं है . हियाँ रहना है त दबंगई , नेतागिरी चाहे क्राइम कीजिए , नहीं त सब दबा देगा , मसल देगा .सिस्टमवे जो लालू गड़बड़ाया ऊ पटरी पर जल्दी आएगा ?

पहला - उ यूपीएससी तो निकल गया .

दूसरा - तब काहे परेशान हैं सर . पानी - बुनी नहीं हुआ , खेत सुक्खल है त बीडीओ को हड़काइए . तूंते बोरिंग करवा देतव . बात करते हैं . अरे पान वाला देखता नहीं है - बड़का साहेब पान खाने के लिए खड़ा हैं . सर , बोल दिए . आपके लिए रिस्का ला दें क्या ?

यह सुनकर मैं बिना पान खाए लौट गया ।

**डॉ० प्रशान्त करण**

साहित्य संगम संस्थान,रा.पं. सं.एस-१८०१/२०१७,नई दिल्ली
बिहार निर्झरिणी

# वारिद सा मेरा जीवन!

नील गगन में घुमड़ बरसता,
वारिद सा मेरा जीवन!

घोर ताप से सूख रहा हो,
बसुधा का सारा जीवन!
जब निदाघ की ज्वालाओं में,
सूख रहा हो वन उपवन!!
नील गगन में घुमड़ बरसता,
वारिद सा मेरा जीवन!१

सरिताएँ जब सूनी- सूनी,
सूख रहा उनका जीवन।
ताल-तलैया और पोखरें,
सूखीं रहती है तन-मन।।
नील गगन में घुमड़ बरसता,
वारिद सा मेरा जीवन!२

दलित-भूमि-तल रहते सोये,
बीजों के अनंकुरित वपन ।
माटी में निमग्न काया भी,
तपती रहती घोर तपन।।

नील गगन में घुमड़ बरसता,
वारिद सा मेरा जीवन!३

जब सूखे फूलों की लतिका,
सूखे-सूखे सब उपवन।
सौरभ की आशा में भटके,
रोता मधुब्रत का गुंजन।।
नील गगन में घुमड़ बरसता,
वारिद सा मेरा जीवन!४

डॉ० ओऽम् प्रकाश मिश्र 'मधुब्रत'

साहित्य संगम संस्थान,रा.पं. सं.एस-१८०१/२०१७,नई दिल्ली
बिहार निर्झरिणी

# तारक_छंद

{ ( वार्णिक)
विधान- 13 वर्ण प्रतिचरण , चार चरण,दो-दो समतुकांत।
गणसूत्र - ससससगा
गणावली- सलगा सलगा सलगा सलगा गा।

112 112 112 112 2 }

**मनमोहन रूप मनोहर पाया ।**
**छवि को लखि मातु पिता सुख पाया ॥**
**निज नैनन से जग को हरषाया ।**
**जन जीवन में नव मोद बढ़ाया ॥**

सरोज शुक्ला श्री
कुचामन सिटी, राजस्थान

# सावन

बह रही है भक्ति की धारा,
बोल बम का लेकर सहारा
सावन शिव को है अति प्यारा,
शीतल मन का यही सहारा।
भींगी धरती की हरियाली,
देख प्रकृति की छटा निराली
जीवन फिर से ऐसे जागा,
भागा अंधियारा अभागा,
झींगुर सुना रहा धुन नूतन,
आनंदित होता है तन मन।
नर नारी मिल मंगल गाते
शिव सनातन को जल चढ़ाते,
ऐसा बोल बम का सहारा,
तन मन देखो कभी न हारा।।
शिव शंकर के भक्त निराले,
श्रेष्ठ सनातन के रखवाले।।

संजय सिंह सरल

# मौसम

पल पल मौसम बदले,
ऋतु आती और जाती,
देखो मौसम ढलते ।
पल पल मौसम बदले।।

जब जब आती है गर्मी,
चलती लू बैचेन हुए,
हवा चले नहीं,
पात हिले नहीं ,
आना जाना बंद हुआ,
उमस में शाम गुजरते,
देखो मौसम ढलते।।

धूप में बैठे बातें करते,
सर्दी के दिन जब आते,
शाम हुई स्वेटर पहने,
आग ताप गर्मी लाते,
रातें है ऐसे कटती,
शीत लहर से कँपते-कँपते
देखो मौसम ढलते।।

रस बरसाने बरखा आई,
चलती है शीतल पुरवाई,
चम-चम चमकी बादल में,
बिजली की आवाज है आई,
गिरती जाती टप-टप बूँदें,
फैला हथेली बूँदें पकड़ते,
देखो मौसम ढलते।।

सुंदर-सुंदर सुमन खिले हैं,
प्रीत ले रही है अँगड़ाई,
भ्रमर आ गुंजार है करते,
प्रकृति में नई पौध है आई,
मनमोहक बयार है चलती,
बसंत के पल्लव सजते ,
देखो मौसम ढलते।।

डॉ भावना दीक्षित ज्ञानश्री

# विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस

विश्व वरिष्ठ दिवस है आया, कर लो इनका सम्मान,
घर के वरिष्ठ होते हैं, हमारे घर परिवार की शान।
इनके अनुभव से सीखो कुछ, रखो सदा इनका ध्यान,
आदर करो सदा इनका तुम,वरिष्ठ होते हैं सदा महान।

हर सुख दुख में साथ खड़े होते,
संबल देते.. माथे पर रखते हाथ।
जरूरत पड़ने पर,उचित सलाह सदा है देते ,
किस्मत वालों के संग होता, वरिष्ठ जनों का साथ।

जो करते वरिष्ठ जनों की सेवा,
मिलता मेवा का फल, सदा यह जान।
इनकी सीख मैं छिपा होता, उन्नति का राज,
जीवन में सदा ले लो तुम, वरिष्ठ जनों से ज्ञान।

प्रात: नित्य प्रणाम कर ,लो वरिष्ठ का आशीर्वाद,
संस्कार बच्चों में डालो, बैठो पास करो संवाद।
घर के वरिष्ठ बुजुर्ग कहलाते, कभी ना करो इनका तिरस्कार,
वट वृक्ष होते हैं घर के, वरिष्ठ जन होते हैं वरदान।

रंजना बिनानी 'काव्या'

# हे राम ! न आते अगर आप ।

है आत्मबली तुम सा न यहाँ दिखता कोई
तुम बढ़े अकेले और लक्ष्य को प्राप्त किया,
आतंक जाल से छुड़ा धरा कर निष्कंटक
तत्क्षण सुपात्र के हाथों में सब सौंप दिया।
किसके समक्ष आतंक डालता अपना ध्वंसक कठिनचाप ?

हे राम ! न आते अगर आप ।

किस तरह यज्ञ हो पाते विश्वामित्र के
शिव धनुष न होता भंग जनक जी पछताते,
दण्डकारण्य के आतंकी दल बल समेत
किस भाँति भला मिटते ऋषिकुल सब सुखपाते?
आ पाता कैसे रामराज्य मिटता कैसे भव पाप-ताप ?

हे राम ! न आते अगर आप ।

किस भाँति भरत का भ्रातु प्रेम उन्नत होता
कैसे सेवक से सेव्य पवनसुत कहलाते?
कैसे सरयू की लहर लहर पावन होती
कवि तुलसीदास कथामृत कैसे बरसाते ?
किस तरह जगद्गुरू हो भारत पाता गौरव गरिमा अमाप ?

हे राम ! न आते अगर आप ।

जग में हो पाता अवध भला क्या वन्दनीय
उन्नत समष्टिवादी संस्कृति कैसे होती ?
बाँधता कौन सागर विराट के ज्वारों को
लंका अब तक राक्षसी भार को ही ढोती।
नर वानर पशु पक्षी समस्त किसका करते अनवरत जाप ?

क्रमशः......

साहित्य संगम संस्थान,रा.पं. सं.एस-१८०१/२०१७,नई दिल्ली
बिहार निर्झरिणी

# हे राम ! न आते अगर आप ।

हे राम ! न आते अगर आप ।

रहती पाषाणी ही सदैव निर्दोष सती
एकाकी घोर उपेक्षाओं से त्रस्त और,
कटु व्यंग-बाण सहती समाज के नित्य नये
पाती न मान वह रंचक भी निज पूर्व ठौर ।
थी सहज सिद्ध ऋषि की वाणी कैस मिट पाता कठिन शाप ?

हे राम ! न आते अगर आप ।

तुम भेदभाव से परे प्रेम के मूर्त रूप
सबको समान सभाव स्नेह देने वाले ।
तुमने समाज से त्यक्त जनों को अपनाया
मद अंहकार कुलवानों का हरने वाले ।
सब भाँति बहिष्कृत अबला का कटता कैसे संकट अमाप ?

हे राम ! न आते अगर आप ।

रहेत सुग्रीव उपेक्षित ही पाषाणों में
शबरी को मिलती पावन नवधा भक्ति कहाँ?
होते फिर धन्य सुतीक्षण ऋषि कैसे बोलो
उन गीधराज को मिलती कैसे मुक्ति कहाँ?
रोती संस्कृति-सभ्यता मनुजता का विघटित होता प्रतापः

हे राम ! न आते अगर आप ।

डॉ० सुरेश कुमार शुक्ल 'संदेश

# मत्तगयंद सवैया
# (मारवाड़ी)

मात कहे मम लाल मनोहर,
तात कहे सुत सांवत सेरो ।
भ्रात कहे भुज भार उठावन
भैन कहे मम माय जणेरो।।
मीत कहे मन मांय बसो तुम ,
नार कहे नर आखिर मेरो।
कष्ट परै कछु काम न आवत,
कूदत क्यों बिन बाग बछेरो।।

घनश्याम सिंह किनियां

# साहित्य संगम संस्थान

## सदस्य मार्गदर्शिका एवं पटल नियम

### (११वे साल के ११ शुभ बिंदु)

1. यह मंच विशुद्ध साहित्यिक सेवा के लिए है; इसे रिश्तेदारी, समाजसेवा, राजनीतिक या धार्मिक विमर्श से सर्वथा पृथक रखें। कोई भी सदस्य किसी अन्य सदस्य के व्यक्तिगत इनबॉक्स (WhatsApp या फोन) पर 'हाय-हेलो' या 'गुड मॉर्निंग' जैसे संदेश नहीं भेजेगा। अति-आवश्यक कार्य होने पर ही प्रासंगिक संपर्क की अनुमति है।
2. साहित्य संगम संस्थान केवल साहित्यिक साधना का मंच है। पटल पर किसी भी प्रकार का विज्ञापन, बाहरी संस्थाओं के प्रचार पोस्ट, व्यावसायिक लिंक या व्यापारिक संदेश साझा करना पूर्णतः वर्जित है।
3. सभी रचनाकार अपनी दैनिक प्रविष्टियाँ केवल और केवल निर्धारित 'विषय प्रवर्तन' वाले कमेंट बॉक्स में ही पोस्ट करेंगे। पटल पर सीधे स्वतंत्र पोस्ट (Approva) की अनुमति नहीं होगी।
4. पटल पर प्रेषित की जाने वाली सभी रचनाएँ पूर्णतः मौलिक, स्वरचित और अप्रकाशित होनी चाहिए। किसी भी प्रकार की साहित्यिक चोरी (Plagiarism) या दूसरे की रचना को अपने नाम से पोस्ट करना पूर्णतः प्रतिबंधित है।
5. अहिंदी भाषी प्रदेशों के रचनाकार अपनी मूल रचना प्रांतीय भाषा में लिखकर उसके साथ ए.आई. द्वारा रूपांतरित हिंदी अनुवाद भी अनिवार्य रूप से पोस्ट करेंगे, और कोई भी सदस्य अपनी रचना को दुनिया की किसी भी अन्य भाषा में ए.आई. से अनुवाद करके पटल के नियमों, स्थान व समय के अनुकूल पोस्ट कर सकता है।
6. प्रत्येक रचनाकार को प्रतिदिन स्वयं या पदाधिकारियों द्वारा सौंपे गए एक रचनात्मक दायित्व का निर्वहन करना अनिवार्य है।
7. पटल के प्रत्येक सदस्य को सप्ताह में कम से कम एक दिन मुख्य मंच या शाला में अपनी सक्रिय उपस्थिति दर्ज कराना आवश्यक है।
8. पटल पर अपनी १ रचना पोस्ट करने के साथ-साथ साथी रचनाकारों की कम से कम ५ रचनाओं पर समीक्षात्मक टिप्पणी (गुण-दोष सहित) देनी होगी। केवल रचना पोस्ट कर सीधे प्रमाणपत्र मांगने वालों को मंच से पृथक कर दिया जाएगा।
9. सदस्य मुख्य रूप से उसी प्रदेश की इकाई का वैध सदस्य माना जाएगा जहाँ का वह निवासी है और जहाँ का उसका पहचान पत्र है। दूसरे प्रदेश के रचनाकार को अन्य प्रांतीय पटलों पर एक निश्चित समय के लिए 'अतिथि साहित्यकार' के रूप में जुड़कर साहित्यिक सेवा की अनुमति होगी।
10. किसी भी सदस्य को यह अधिकार नहीं है कि वह पटल पर किसी व्यक्ति विशेष या संस्थान की कमियाँ उजागर करे या किसी को उलाहना दे। जहाँ भी कमी या अभाव नज़र आए, सदस्य अपनी रचनात्मकता और सूझबूझ से उसे स्वयं दूर करने का प्रयास करेगा अथवा आवश्यकता पड़ने पर पदाधिकारियों से व्यक्तिगत रूप से मर्यादित संपर्क स्थापित करेगा।
11. पटल पर किसी भी प्रकार का विवाद, कटुता या तर्क-वितर्क फैलाने वाले व्यक्ति को बिना किसी पूर्व चेतावनी के सबसे पहले मंच से तत्काल पृथक/ब्लॉक किया जाएगा।



# धन्यवाद